

भारत में यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत

1	कूडियाट्टम्, संस्कृत थियेटर, केरल
2	मुदियेत्त: केरल की एक थिएटर
3	वैदिक जप की परंपरा
4	रामलीला - रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन
5	रम्माण: धार्मिक उत्सव और गढ़वाल हिमालय की थिएटर
6	कालबेलिया: राजस्थान के लोकनृत्य
7	छाऊ नृत्य: पूर्वी भारत
8	लद्दाख के बौद्ध जप
9	मणिपुर के संकीर्तन, अनुष्ठान गायन, ढोल और नृत्य
10	जांडियाला गुरु पंजाब के थाठेरस के मध्य पीतल और तांबे के शिल्पबर्तन बनाने की पारंपरिक कला
11	योग
12	नवरोज़
13	कुंभ मेला

कुंभ मेला

- कुंभ मेला पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण समागम है, जिसमें श्रद्धालु पवित्र नदी में स्नान करते हैं या डुबकी लगाते हैं।
- वर्ष 2017 में अंकित

नवरोज़

- वर्ष 2016 में सूची में अंकित।
- 21 मार्च को अफगानिस्तान, अज़रबैजान, भारत, ईरान, इराक, कज़ाखस्तान, किर्गिस्तान, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्की, तुर्कमेनिस्तान और उज़्बेकिस्तान में नव वर्ष की शुरुआत के रूप में मनाया जाता है।
- इसे नौरिज, नवरूज़, नवरोउज़, नेवरुज़, नूरुज़, नोब्रूज़, नाउरोज़ या नवरोज़ के रूप में जाना जाता है जिसका अर्थ है 'नया दिन', इस दिन लगभग दो सप्ताह की अवधि के लिए अनुष्ठान, समारोह और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

पंजाब के जंडियाला गुरु के ठठेरों की पीतल और तांबे के बर्तन बनाने की पारंपरिक शिल्पकला

- वर्ष 2014 में सूची में अंकित।
- जंडियाला गुरु के ठठेरों की शिल्पकला पंजाब में पीतल और तांबे के बर्तनों के विनिर्माण की पारंपरिक तकनीक है।
- इस्तेमाल धातुओं - तांबा, पीतल और कुछ मिश्र धातु - को स्वास्थ्य के लिए लाभदायक माना जाता है।

मणिपुर के संकीर्तन, धार्मिक गायन, मृदंग (नगाड़ा) वादन और नृत्य

- वर्ष 2013 में सूची में अंकित।
- संकीर्तन में मणिपुर के मैदानी इलाकों के वैष्णव लोगों के जीवन में धार्मिक अवसरों और विभिन्न रंगमंच के उपलक्ष्य में कलाओं की एक श्रृंखला आयोजित होती है।
- मंदिर पर संकीर्तन अभ्यास केंद्र, जहां कलाकार कृष्ण के जीवन और कर्मों का गीत और नृत्य के माध्यम से वर्णन करते हैं।
- एक अनूठे कार्यक्रम में, नगाड़ा बजाने वाले दो व्यक्ति और लगभग दस गायक-नर्तकियां भक्तों से घिरे एक हॉल या घरेलू आंगन में प्रदर्शन करते हैं।

लद्दाख का बौद्ध जप: जम्मू-कश्मीर के ट्रांस-हिमालयी लद्दाख क्षेत्र में पवित्र बौद्ध ग्रंथों का सस्वर पाठ

- वर्ष 2012 में सूची में अंकित।
- लद्दाख क्षेत्र के मठों और गांवों में, बौद्ध लामा (पुजारी) बुद्ध की जीवन, दर्शन और शिक्षाओं को व्यक्त करने वाले पवित्र ग्रंथों का कीर्तन करते हैं।
- लद्दाख में बौद्ध धर्म के दो रूपों - महायान और वज्रयान - और चार प्रमुख संप्रदाय अर्थात् नर्यिंग्मा, कगयुद, शाक्य और जेलुक का अभ्यास किया जाता है।
- प्रत्येक संप्रदाय के कीर्तन करने के अनेक रूप होते हैं, जिनका जीवनकाल के अनुष्ठानों के दौरान और बौद्ध और कृषि कैलेंडर में महत्वपूर्ण अवसरों पर अभ्यास किया जाता है।

छाऊ नृत्य

- वर्ष 2018 में सूची में अंकित।
- छाऊ नृत्य पूर्वी भारत की परंपरा है जो महाभारत और रामायण महाकाव्यों के प्रसंगों सहित, स्थानीय लोकगीत और अमूर्त विषयों को अभिनीत करती है।
- इसकी तीन पृथक शैलियां सेराइकेल्ला, पुरुलिया और मयूरभंज के क्षेत्रों से मिलती है, जिसमें प्रथम दो में मुखौटों का उपयोग करते हैं।
- छाऊ नृत्य क्षेत्रीय पर्वों, विशेष रूप से वसंतोत्सव चैत्र पर्व से मुख्य रूप से जुड़ा हुआ है।

- छाऊ नृत्य पारंपरिक कलाकारों या स्थानीय समुदायों के परिवारों के पुरुष नर्तकों को सिखाया जाता है।
- यह नृत्य परंपरागत और लोक धुनों पर एक खुली जगह में रात्रि में किया जाता है, जो मोहिरी और शहनाई पर बजाई जाती हैं।

राजस्थान का कालबेलिया लोक गीत और नृत्य

- वर्ष 2010 में सूची में अंकित
- गीत और नृत्य कालबेलिया समुदाय की जीवन शैली के पारंपरिक तरीके की अभिव्यक्ति हैं।

मुडियेट्ट, केरल का शास्त्रीय थियेटर और नृत्य नाटक

- वर्ष 2010 में सूची में अंकित
- मुडियेट्ट देवी काली और राक्षस दरिका के बीच युद्ध की पौराणिक कथाओं पर आधारित केरल का एक शास्त्रीय नृत्य-नाटक है।
- यह एक समुदायिक अनुष्ठान है जिसमें पूरा गांव भाग लेता है।

रम्मन, भारत के गढ़वाल हिमालय का धार्मिक पर्व और शास्त्रीय नाट्यशाला

- वर्ष 2009 में सूची में अंकित।
- हर वर्ष अप्रैल के अंत में उत्तराखंड राज्य (उत्तरी भारत) में सालूर-डुंगरा गांवों में रम्मन मनाया जाता है, जो एक स्थानीय देवता भूमियाल देवता के सम्मान में मनाया जाने वाला एक धार्मिक उत्सव है, देवता के मंदिर में अनेक उत्सव मनाए जाते हैं।
- यह कार्यक्रम अत्यधिक जटिल अनुष्ठानों से बना है: जिसमें राम के महाकाव्य और विभिन्न पौराणिक कथाओं के एक संस्करण का पाठ, और गीतों और मुखौटा नृत्य का प्रदर्शन होता है।

कुट्टीयट्टम, संस्कृत नाट्यशाला

- वर्ष 2008 में सूची में अंकित।
- संस्कृत नाट्यशाला कुट्टीयट्टम, जो केरल प्रांत में प्रचलित है, भारत की सबसे पुरानी जीवित नाट्य परंपराओं में से एक है।
- अपनी शैलीबद्ध और संहितात्मक नाटकीय भाषा में, नेत्र अभिनय (आंखों की अभिव्यक्ति) और हस्त अभिनय (संकेतों की भाषा) प्रमुख हैं।

वैदिक जप की परंपरा

- वर्ष 2008 में सूची में अंकित।

रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन

- वर्ष 2008 में सूची में अंकित।

byjusexamprep.com